

भारत-अमेरिका संबंधः 21वीं सदी में राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक आयाम

रजनीश

शोधार्थी, (राजनीतिक विज्ञान विभाग)
आर. एस. एस. कॉलेज, पिलखुवा
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेल: vj724815@gmail.com

सारांश

21वीं सदी में भारत-अमेरिका संबंधों ने एक आधारभूत परिवर्तन का अनुभव किया है। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से दोनों देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक सहयोग में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। यह शोध पत्र 21वीं सदी के पहले दो दशकों में भारत-अमेरिका संबंधों के विकास का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें परमाणु समझौते, आर्थिक साझेदारी, रक्षा सहयोग, और हिंद-प्रशांत रणनीति जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गई है। अनुसंधान से पता चलता है कि दोनों देशों के बीच बढ़ते सहयोग के बावजूद, व्यापार असंतुलन, आप्रवासन नीति, और क्षेत्रीय मुद्दों पर मतभेद अभी भी चुनौतियां बनी हुई हैं।

Reference to this paper
should be made as follows:

Received: 30/08/25
Approved: 15/09/25

रजनीश

भारत-अमेरिका संबंधः
21वीं सदी में राजनीतिक,
आर्थिक और सामरिक आयाम

RJPP Apr.25-Sept.25,
Vol. XXIII, No. II,
Article No. 37
Pg. 279-290

Online available at:
[https://anubooks.com/
journal-volume/rjpp-sept-
2025-vol-xxiii-no2-261](https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2025-vol-xxiii-no2-261)

[https://doi.org/10.31995/
rjpp.2025.v23i02.037](https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.037)

प्रस्तावना

भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच द्विपक्षीय संबंध आज विश्व की सबसे महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक साझेदारियों में से एक हैं। दोनों देश दुनिया की सबसे बड़ी लोकतंत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं और वैश्विक शांति, स्थिरता और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 21वीं सदी की शुरुआत से ही दोनों देशों के बीच संबंधों में गुणात्मक परिवर्तन आया है, जो शीत युद्ध के दौरान के तनावपूर्ण रिश्तों से एक स्पष्ट विपरीत दिशा दर्शाता है। 21वीं सदी में भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच संबंध वैश्विक भूराजनीति में एक केंद्रीय साझेदारी के रूप में उभरे हैं। दोनों देश, जो विश्व के सबसे बड़े और पुराने लोकतंत्र हैं, लोकतंत्र, स्वतंत्रता, और नियम-आधारित वैश्विक व्यवस्था जैसे साझा मूल्यों पर आधारित एक मजबूत रणनीतिक गठजोड़ विकसित कर चुके हैं (सिंह, 2018)। शीत युद्ध के दौरान भारत की गुट-निरपेक्ष नीति और अमेरिका का पाकिस्तान के साथ गठजोड़ संबंधों में दूरी का कारण बना, लेकिन शीत युद्ध के बाद वैश्विक शक्ति संतुलन में परिवर्तन और 1991 में भारत के आर्थिक उदारीकरण ने इन संबंधों को नई गति प्रदान की (कचरु, 2020)।

शीत युद्ध के दौरान भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति और अमेरिका के पाकिस्तान के साथ निकट संबंध दोनों देशों के बीच दूरी के कारण थे। हालांकि, सोवियत संघ के विघटन के बाद और वैश्विक व्यवस्था में आए बदलाव ने दोनों देशों को अपनी विदेश नीति पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया। भारत की आर्थिक उदारीकरण की नीति और अमेरिका की एशिया-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती रुचि ने द्विपक्षीय संबंधों को नई दिशा प्रदान की।

इस शोध पत्र का उद्देश्य 21वीं सदी में भारत-अमेरिका संबंधों के विकास का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करना है। यह अध्ययन राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक आयामों पर केंद्रित है और दोनों देशों के बीच बढ़ते सहयोग तथा मौजूदा चुनौतियों की पहचान करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत-अमेरिका संबंधों का इतिहास भारत की स्वतंत्रता के समय से ही जटिल रहा है। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद प्रारंभिक वर्षों में दोनों देशों के बीच सहयोग की संभावनाएं थीं, लेकिन शीत युद्ध की शुरुआत के साथ ही स्थिति बदल गई। भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति और अमेरिका के साथ पाकिस्तान के बढ़ते रक्षा संबंध दोनों देशों की बीच दूरी के मुख्य कारण बने।

1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान अमेरिका ने भारत को सैन्य सहायता प्रदान की, लेकिन यह सहयोग अस्थायी था (सिंह, 2018)। लेकिन 1965 और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्धों के दौरान अमेरिका का पाकिस्तान के प्रति झुकाव स्पष्ट हो गया। विशेष रूप से 1971 के बांग्लादेश मुक्ति युद्ध के दौरान अमेरिका की भूमिका ने भारत-अमेरिका संबंधों को गहरे संकट में डाल दिया। इस दौरान अमेरिका ने बंगाल की खाड़ी में सातवें बेड़े को भेजा था, जिसे भारत ने धमकी के रूप में देखा था।

1974 में भारत के परमाणु परीक्षण ने संबंधों को और भी जटिल बना दिया। अमेरिका ने इसे परमाणु अप्रसार संधि (NPT) के सिद्धांतों के विरुद्ध माना और भारत पर प्रतिबंध लगाए। इसके बाद के दशकों में भारत-अमेरिका संबंध एक स्थिर लेकिन सीमित ढांचे में बने रहे।

1990 के दशक में सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत की विदेश नीति में परिवर्तन आना शुरू हुआ। भारत की आर्थिक उदारीकरण की नीति और अमेरिका की एशिया-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती रुचि ने दोनों देशों के लिए नए अवसर पैदा किए। हालांकि, 1998 में भारत के दूसरे परमाणु परीक्षण ने फिर से संबंधों में तनाव पैदा किए, लेकिन इस बार अमेरिका की प्रतिक्रिया अधिक संयमित थी। 1998 में भारत के परमाणु परीक्षणों के बाद अमेरिका ने प्रतिबंध लगाए, लेकिन 2000 में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा और 2005 में भारत-अमेरिका नागरिक परमाणु समझौते ने संबंधों को एक नई दिशा दी (मलिक, 2019)। यह समझौता दोनों देशों के बीच विश्वास निर्माण और रणनीतिक सहयोग का प्रतीक बना।

21वीं सदी की शुरुआत: नई दिशा

21वीं सदी की शुरुआत भारत-अमेरिका संबंधों के लिए एक नया अध्याय लेकर आई। 2000 में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा ने दोनों के बीच संबंधों को नई ऊंचाई प्रदान की। यह यात्रा दोनों देशों के बीच बेहतर समझ और सहयोग की शुरुआत का प्रतीक थी। क्लिंटन ने अपनी यात्रा के दौरान कहा था कि “भारत और अमेरिका प्राकृतिक सहयोगी हैं” और दोनों देशों के बीच साझा मूल्यों और हितों की पहचान की।

9/11 के आतंकवादी हमलों के बाद आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत और अमेरिका के बीच साझा हित और भी स्पष्ट हो गए। दोनों देशों ने आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में सहयोग बढ़ाया। भारत ने अफगानिस्तान में अमेरिकी के लिए अपने हवाई क्षेत्र और सुविधाओं का उपयोग करने की अनुमति दी, जो दोनों देशों की बीच बढ़ते विश्वास का संकेत था।

अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के दौरान भारत-अमेरिका संबंधों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। 2004 में शुरू हुए अगली पीढ़ी के कदम (Next Steps in Strategic Partnership - NSSP) समझौते ने दोनों देशों के बीच उच्च प्रौद्योगिकी व्यापार, नागरिक परमाणु सहयोग और अंतरिक्ष सहयोग के क्षेत्र में नए अवसर पैदा किए। यह समझौता दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राजनीतिक आयाम

परमाणु समझौता: एक ऐतिहासिक मोड़

21वीं सदी में भारत-अमेरिका संबंधों का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक मील का पत्थर 2005 में भारत-अमेरिका नागरिक परमाणु समझौता था। राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के बीच हुए इस समझौते ने तीन दशकों से अधिक समय से चली आ रही परमाणु अलगाव की नीति को समाप्त कर दिया। यह समझौता न केवल भारत की परमाणु स्थिति को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्रदान करता था, बल्कि दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को एक नया आयाम भी देता था।

इस समझौते के तहत भारत ने अपने नागरिक और सैन्य परमाणु कार्यक्रमों को अलग करने की प्रतिबद्धता जताई और अपने नागरिक परमाणु सुविधाओं को अंतर्राष्ट्रीय निगरानी में रखने पर सहमति व्यक्त की। बदले में अमेरिका ने भारत को नागरिक परमाणु प्रौद्योगिकी और ईंधन प्रदान करने की अनुमति दी। यह समझौता व्यापक रूप से भारत की विदेश नीति की एक बड़ी सफलता माना जाता है और इसने भारत को वैश्विक परमाणु व्यापार में पुनः शामिल होने का अवसर प्रदान किया।

परमाणु समझौते की वार्ता और अनुमोदन की प्रक्रिया में दोनों देशों में राजनीतिक चुनौतियां आईं। भारत में वामपंथी दलों और कुछ राष्ट्रवादी समूहों का मानना था कि यह समझौता भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को सीमित करता है। अमेरिका में भी कुछ सांसदों और विशेषज्ञों का मानना था कि यह समझौता परमाणु अप्रसार के सिद्धांतों को कमजोर करता है। हालांकि, दोनों देशों की सरकारों और नेताओं की प्रतिबद्धता के कारण यह समझौता अंततः 2008 में लागू हुआ।

द्विपक्षीय राजनीतिक सहयोग

परमाणु समझौते के अलावा, 21वीं सदी में भारत-अमेरिका के बीच राजनीतिक सहयोग के कई अन्य क्षेत्र भी विकसित हुए हैं। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोनों देशों ने मिलकर काम किया है। 2008 के मुंबई हमलों के बाद अमेरिका ने भारत की खुफिया जानकारी साझा करने और जांच में सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एफबीआई और भारतीय जांच एजेंसियों के बीच सहयोग बढ़ा है और दोनों देशों ने आतंकवाद के खिलाफ संयुक्त कार्य योजना पर हस्ताक्षर किए हैं। 2014 से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत-अमेरिका संबंधों में और अधिक गति आई। मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपतियों—बराक ओबामा, डोनाल्ड ट्रम्प, और जो बाइडेन—के साथ नियमित मुलाकातें कीं, जिनमें 2014 और 2016 में 'हाउडी मोदी' और 'नमस्ते ट्रम्प' जैसे आयोजनों ने दोनों देशों के बीच जन-जन के संबंधों को मजबूत किया (जोशी, 2023)।

संयुक्त राष्ट्र सुधार के मुद्दे पर भी अमेरिका का भारत के प्रति रुख में सकारात्मक बदलाव आया है। अमेरिका ने भारत की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता की आकांक्षा के लिए समर्थन व्यक्त किया है। राष्ट्रपति ओबामा ने 2010 में भारतीय संसद में अपने भाषण में स्पष्ट रूप से कहा था कि "संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत का स्थान होना चाहिए।" यह भारत की वैश्विक महत्वाकांक्षाओं के लिए अमेरिकी समर्थन का एक महत्वपूर्ण संकेत था।

जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर भी दोनों देशों ने सहयोग बढ़ाया है। 2015 के पेरिस जलवायु समझौते की वार्ता में भारत और अमेरिका ने मिलकर काम किया। भारत-अमेरिका स्वच्छ ऊर्जा वित्त पहल और मिशन इनोवेशन जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से दोनों देशों ने स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकी के विकास में सहयोग किया है। यह सहयोग न केवल पर्यावरण के लिए बल्कि दोनों देशों के ऊर्जा सुरक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण है।

राजनीतिक संस्थागत ढांचा

भारत और अमेरिका के बीच राजनीतिक संबंधों की नींव साझा लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित है। दोनों देश स्वतंत्रता, मानवाधिकार, और नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को बार-बार दोहराते हैं (मिश्रा, 2021)। 21वीं सदी में भारत-अमेरिका राजनीतिक संबंधों को संस्थागत रूप देने के लिए कई महत्वपूर्ण ढांचे विकसित किए गए हैं। द्विपक्षीय रणनीतिक संवाद (Strategic Dialogue) की स्थापना 2009 में हुई थी, जो दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय राजनीतिक चर्चा का मंच प्रदान करती है। यह संवाद विदेश मंत्रियों के स्तर पर होता है और इसमें द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा होती है।

2+2 मंत्रिस्तरीय संवाद की स्थापना 2018 में हुई थी, जिसमें दोनों देशों के विदेश मंत्री और रक्षा मंत्री भाग लेते हैं। यह संवाद रक्षा और विदेश नीति के मुद्दों पर समन्वय बढ़ाने के लिए एक

महत्वपूर्ण मंच है। इसके अलावा, दोनों देशों के बीच नियमित रूप से प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के स्तर पर बैठकें होती हैं जो द्विपक्षीय संबंधों को नई दिशा प्रदान करती हैं।

आर्थिक आयाम

व्यापार और निवेश

21वीं सदी में भारत-अमेरिका के बीच आर्थिक संबंधों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। 2000 में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार मात्र 19 बिलियन डॉलर था, जो 2019 तक बढ़कर 142 बिलियन डॉलर हो गया। भारत और अमेरिका के बीच आर्थिक संबंध 21वीं सदी में तेजी से विकसित हुए हैं। 2022-23 में, अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया, जिसमें द्विपक्षीय व्यापार 128.55 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 7.65% की वृद्धि दर्शाता है (भारत सरकार, 2023)। यह वृद्धि न केवल मात्रा में बल्कि गुणवत्ता में भी महत्वपूर्ण रही है। दोनों देशों के बीच व्यापार अब मुख्यतः उच्च तकनीक वाले सामानों और सेवाओं पर केंद्रित है।

भारत से अमेरिका का निर्यात मुख्यतः सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं, फार्मास्युटिकल्स, हीरे और आभूषण, कपड़ा और कृषि उत्पादों में होता है। अमेरिका से भारत का निर्यात तेल और गैस, विमान और विमान पुर्जे, कोयला, कंप्यूटर हार्डवेयर और मशीनरी में होता है। सेवा क्षेत्र में भारत का प्रदर्शन विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। भारतीय आईटी कंपनियों ने अमेरिकी बाजार में मजबूत स्थिति बनाई है और इन्फोसिस, टीसीएस, विप्रो जैसी कंपनियां अमेरिका में प्रमुख नियोक्ता बन गई हैं।

निवेश के क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। अमेरिकी कंपनियों का भारत में संचयी निवेश 40 बिलियन डॉलर से अधिक है। जेनरल इलेक्ट्रिक, जेनरल मोटर्स, फोर्ड, आईबीएम, माइक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी अमेरिकी कंपनियों ने भारत में महत्वपूर्ण निवेश किया है। भारतीय कंपनियों ने भी अमेरिका में निवेश बढ़ाया है। टाटा स्टील का कोरस अधिग्रहण, टाटा मोटर्स का जगुआर लैंड रोवर अधिग्रहण, और अदानी समूह के विभिन्न निवेश इसके उदाहरण हैं।

प्रौद्योगिकी सहयोग

21वीं सदी में भारत-अमेरिका आर्थिक सहयोग की एक महत्वपूर्ण विशेषता प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग रही है। दोनों देशों के बीच सूचना प्रौद्योगिकी, बायोटेक्नोलॉजी, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और रक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में व्यापक सहयोग हुआ है। भारत की सिलिकॉन वैली के रूप में बेंगलुरु की छवि और अमेरिका में भारतीय इंजीनियरों और उद्यमियों की सफलता ने दोनों देशों के बीच प्रौद्योगिकी सहयोग को मजबूत बनाया है। अमेरिकी राष्ट्रीय विज्ञान फाउंडेशन और भारत के नेशनल रिसर्च फाउंडेशन के बीच समझौता ज्ञापन ने उभरती प्रौद्योगिकियों पर संयुक्त शोध को बढ़ावा दिया है (भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, 2023)।

अमेरिका की प्रमुख प्रौद्योगिकी कंपनियों ने भारत में अनुसंधान और विकास केंद्र स्थापित किए हैं। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, फेसबुक, ट्विटर जैसी कंपनियों के भारत में बड़े कार्यालय हैं और वे भारतीय बाजार के लिए विशेष उत्पाद विकसित कर रही हैं। इसके अलावा, भारतीय स्टार्टअप्स को अमेरिकी निवेशकों से महत्वपूर्ण फंडिंग मिल रही है। पिलपकार्ट, ओला, पेटीएम जैसी कंपनियों में अमेरिकी निवेश के कारण भारत में ई-कॉमर्स और फिनटेक क्षेत्र का तेज विकास हुआ है।

डिजिटल इंडिया पहल और मेक इन इंडिया जैसे कार्यक्रमों में अमेरिकी कंपनियों की व्यापक भागीदारी है। इन पहलों के माध्यम से दोनों देशों के बीच प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और स्थानीय उत्पादन में सहयोग बढ़ा है। विशेष रूप से अक्षय ऊर्जा, स्मार्ट सिटी, और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सहयोग हुआ है।

ऊर्जा सहयोग

ऊर्जा सुरक्षा दोनों देशों के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है और इस क्षेत्र में भारत-अमेरिका सहयोग काफी विकसित हुआ है। अमेरिका में शेल गैस क्रांति के बाद भारत ने अमेरिका से तेल और गैस का आयात बढ़ाया है। 2018 में भारत ने अमेरिका से 19 बिलियन डॉलर का ऊर्जा उत्पाद आयात किया था। यह न केवल भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए बल्कि दोनों देशों के बीच व्यापार संतुलन के लिए भी महत्वपूर्ण है।

अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच व्यापक सहयोग है। भारत के राष्ट्रीय सौर मिशन में अमेरिकी कंपनियों की महत्वपूर्ण भागीदारी है। जेनरल इलेक्ट्रिक, फर्स्ट सोलर, सनपावर जैसी कंपनियों ने भारत में सौर ऊर्जा पवन ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश किया है। इंटरनेशनल सोलर एलायंस की स्थापना में भी अमेरिका ने समर्थन प्रदान किया है।

परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में 2005 के नागरिक परमाणु समझौते के बाद सहयोग की संभावनाएं बढ़ी हैं। हालांकि, परमाणु देयता कानून और अन्य नियामक मुद्दों के कारण इस क्षेत्र में प्रगति धीमी रही है। वेस्टिंगहाउस इलेक्ट्रिक कंपनी की भारत में परमाणु रिएक्टर स्थापित करने की योजना है, लेकिन वित्तीय और तकनीकी चुनौतियों के कारण इसमें देरी हो रही है।

सामरिक और रक्षा आयाम

रक्षा सहयोग का विकास

21वीं सदी में भारत-अमेरिका के बीच रक्षा सहयोग में गुणात्मक परिवर्तन आया है। पिछले दो दशकों में दोनों देशों के बीच रक्षा व्यापार में तेज वृद्धि हुई है। 2008 से 2018 के बीच अमेरिका से भारत का रक्षा आयात 17 बिलियन डॉलर से अधिक का रहा है। इसमें सी-17 ग्लोबमास्टर परिवहन विमान, सी-130 जे सुपर हरक्यूलिस परिवहन विमान, अपाचे हेलीकॉप्टर, चिनूक हेलीकॉप्टर और पी-8 आई पोसाइड नौसेना विमान शामिल हैं।

रक्षा सहयोग में तकनीक सहयोग एक महत्वपूर्ण पहलू है। भारत के मेक इन इंडिया कार्यक्रम के तहत अमेरिकी रक्षा कंपनियों ने भारत में उत्पादन और तकनीकी सहयोग के लिए महत्वपूर्ण समझौते किए हैं। लॉकहीड मार्टिन ने एफ-16 विमान के भारत में उत्पादन का प्रस्ताव दिया है, जबकि बोइंग ने एफ/ए-18 सुपर हॉर्नेट के स्थानीय उत्पादन की योजना बनाई है। इसके अलावा, भारत और अमेरिका के बीच संयुक्त रक्षा प्रौद्योगिकी विकास की कई परियोजनाएं चल रही हैं।

सैन्य अभ्यास और प्रशिक्षण

दोनों देशों के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यासों में भी महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। युद्ध अभ्यास (सेना), मालाबार (नौसेना), और कोप इंडिया (वायु सेना) जैसे नियमित अभ्यास दोनों देशों की सेनाओं के बीच परस्पर सहयोग और समझ बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से मालाबार अभ्यास में जापान की भागीदारी के बाद यह त्रिपक्षीय सहयोग का एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है।

भारतीय सैन्य अधिकारियों का अमेरिकी सैन्य संस्थानों में प्रशिक्षण और अमेरिकी अधिकारियों का भारतीय संस्थानों में प्रशिक्षण भी बढ़ा है। रक्षा प्रौद्योगिकी और व्यापार पहल (DTTI) के तहत दोनों देशों के बीच प्रौद्योगिकी की साझाकरण और संयुक्त विकास की परियोजनाएं चल रही हैं।

मुख्य सैन्य समझौते

21वीं सदी में भारत-अमेरिका के बीच तीन महत्वपूर्ण आधारभूत सैन्य समझौते हुए हैं जो दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को संस्थागत रूप प्रदान करते हैं। पहला समझौता लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA) 2016 में हुआ था, जो दोनों देशों की सेनाओं को एक-दूसरे के सैन्य अड्डों का उपयोग करने की अनुमति देता है। दूसरा समझौता कम्युनिकेशन कम्पैटिबिलिटी एंड सिन्क्रोसिटी एग्रीमेंट (COMCASA) 2018 में हुआ था, जो दोनों देशों के बीच सुरक्षित संचार प्रणाली स्थापित करता है।

तीसरा और नवीनतम समझौता बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट (BECA) 2020 में हुआ था, जो दोनों देशों के बीच भू-स्थानिक जानकारी साझा करने की अनुमति देता है। ये समझौते भारत-अमेरिका रक्षा सहयोग को एक नई ऊंचाई पर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हिंद-प्रशांत रणनीति और क्षेत्रीय सुरक्षा

हिंद-प्रशांत की अवधारणा

हिंद-प्रशांत रणनीति 21वीं सदी में भारत-अमेरिका सामरिक सहयोग का एक महत्वपूर्ण आयाम है। यह अवधारणा हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को एक एकीकृत भू-राजनीतिक और भू-आर्थिक क्षेत्र के रूप में देखती है। अमेरिका की “एशिया पिवट” या “रिबैलेंसिंग टू एशिया” नीति और भारत की “एक्ट ईस्ट” नीति के बीच तालमेल ने हिंद-प्रशांत सहयोग को मजबूत बनाया है।

हिंद-प्रशांत रणनीति का मुख्य उद्देश्य इस क्षेत्र में एक स्वतंत्र, खुला और नियम-आधारित व्यवस्था बनाए रखना है। यह रणनीति मुख्यतः चीन की बढ़ती शक्ति और इसके क्षेत्रीय प्रभाव को संतुलित करने के उद्देश्य से विकसित की गई है। भारत और अमेरिका दोनों देशों का मानना है कि समुद्री मार्गों की सुरक्षा और स्वतंत्र नौपरिवहन इस क्षेत्र की समृद्धि के लिए आवश्यक है।

काड (चतुर्भुजीय सुरक्षा संवाद)

हिंद-प्रशांत रणनीति का एक महत्वपूर्ण घटक काड (भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया) का गठन है। यह समूह पहली बार 2007 में बना था, लेकिन 2017 में इसे पुनर्जीवित किया गया। काड का उद्देश्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र में लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देना और क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों का सामना करना है।

काड के सदस्य देशों के बीच नियमित रूप से विदेश मंत्री स्तर की बैठकें होती हैं और हाल ही में नेताओं के स्तर पर भी बैठकें आयोजित की जा रही हैं। इस समूह ने कोविड-19 महामारी के दौरान वैक्सीन वितरण में सहयोग किया है और जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा और आपदा प्रबंधन जैसे मुद्दों पर भी काम कर रहा है।

चीन चुनौती और सहयोग

चीन की बढ़ती शक्ति और इसके क्षेत्रीय व्यवहार भारत-अमेरिका सामरिक सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा हैं दक्षिण चीन सागर में चीन की आक्रामकता और लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल

(LAC) पर भारत-चीन तनाव दोनों देशों के लिए चिंता का विषय है। 2020 में गलवान घाटी में भारत-चीन के बीच हुई झड़प के बाद अमेरिका ने भारत के साथ अपनी एकजुटता व्यक्त की थी।

हालांकि, चीन के साथ संबंधों में भारत और अमेरिका का दृष्टिकोण कुछ मामलों में अलग है। भारत का चीन के साथ व्यापक आर्थिक संबंध है और वह चीन के साथ पूर्ण टकराव से बचना चाहता है। अमेरिका का चीन के साथ व्यापार युद्ध और तकनीकी प्रतिस्पर्धा भारत के लिए अवसर भी प्रदान करती है और चुनौती भी।

आर्थिक चुनौतियां और अवसर

व्यापार असंतुलन

भारत-अमेरिका आर्थिक संबंधों में व्यापार असंतुलन एक महत्वपूर्ण चुनौती है। भारत का अमेरिका के साथ व्यापार अधिशेष है, जो 2019 में लगभग 23 बिलियन डॉलर था। अमेरिका का मानना है कि यह असंतुलन भारत की व्यापार नीति और बाजार पहुंच में बाधाओं के कारण है। डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति काल में इस मुद्दे पर काफी तनाव देखा गया था।

अमेरिका ने भारत को सामान्यीकृत प्राथमिकता प्रणाली (GSP) से हटाने और कुछ भारतीय उत्पादों पर अतिरिक्त शुल्क लगाने की धमकी दी थी। भारत ने भी प्रतिकार में कुछ अमेरिकी उत्पादों पर शुल्क बढ़ाया था। हालांकि, दोनों देशों के नेताओं के बीच नियमित बातचीत से इस तनाव को कम करने की कोशिश की गई है।

सेवा क्षेत्र और एच-1 बी वीज़ा

सेवा क्षेत्र में भारत की मजबूत स्थिति के बावजूद अमेरिका में आप्रवासन नीति में बदलाव चिंता का विषय है। एच-1 बी वीज़ा नीति में सख्ती और अमेरिका में भारतीय आईटी पेशेवरों के लिए बढ़ती चुनौतियां दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग को प्रभावित कर सकती है। भारतीय आईटी कंपनियों को अमेरिका में स्थानीय टैलेंट हायरिंग बढ़ाने और अपने बिजनेस मॉडल में बदलाव करने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।

इसके अलावा, अमेरिका में भारतीय छात्रों के लिए ओपीटी (Optical Practical Training) और अन्य कार्य अनुमतियों में बदलाव भी चिंता का विषय है। हालांकि, कोविड-19 महामारी के बाद अमेरिकी कंपनियों की भारत में आउटसोर्सिंग की मांग बढ़ी है, जो भारतीय सेवा क्षेत्र के लिए नए अवसर प्रदान करती है।

भविष्य की संभावनाएं

व्यापार असंतुलन और अन्य चुनौतियों के बावजूद भारत-अमेरिका आर्थिक सहयोग की भविष्य की संभावनाएं उज्ज्वल हैं। दोनों देशों के बीच एक सीमित व्यापार समझौते की बातचीत चल रही है जो द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा दे सकती है। भारत के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम, स्मार्ट सिटी मिशन और इंफ्रास्ट्रक्चर विकास में अमेरिकी कंपनियों की भागीदारी की व्यापक संभावनाएं हैं।

कोविड-19 महामारी के बाद वैश्विक सप्लाय चेन में बदलाव और चीन पर निर्भरता कम करने की वैश्विक कोशिश भारत के लिए नए अवसर प्रदान करती है। अमेरिकी कंपनियों का भारत में विनिर्माण और सेवा केंद्र स्थापित करने की बढ़ती रुचि इस क्षेत्र में सहयोग को मजबूत बना सकती है।

चुनौतियां और सीमाएं

पाकिस्तान कारक

पाकिस्तान के साथ संबंध भारत-अमेरिका द्विपक्षीय संबंधों में एक जटिल कारक बन रहा है। हालांकि शीत युद्ध के दौरान की तुलना में अब यह मुद्दा कम महत्वपूर्ण है, लेकिन अफगानिस्तान में अमेरिका की भागीदारी और पाकिस्तान की भूमिका अभी भी भारत-अमेरिका संबंधों को प्रभावित करती है। पाकिस्तान के साथ आतंकवाद के मुद्दे पर भारत और अमेरिका के बीच कभी-कभी मतभेद दिखाई देते हैं।

अमेरिका के अफगानिस्तान से वापसी के बाद इस क्षेत्र में पाकिस्तान की बढ़ती भूमिका और तालिबान के साथ इसके संबंध भारत के लिए चिंता का विषय है। भारत चाहता है कि अमेरिका पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद के मुद्दे पर अधिक सख्त रुख अपनाए।

रूस संबंध

रूस के साथ भारत के ऐतिहासिक संबंध भारत-अमेरिका सहयोग में एक जटिल कारक हैं। भारत की रक्षा जरूरतों का एक बड़ा हिस्सा अभी भी रूसी आपूर्ति पर निर्भर है। S-400 मिसाइल रक्षा प्रणाली की खरीद के मुद्दे पर अमेरिका के CAATSA (Countering America's Adversaries Through Sanctions Act) कानून के तहत संभावित प्रतिबंधों की चिंता है।

भारत का तर्क है कि उसके रूस के साथ संबंध ऐतिहासिक हैं और रणनीतिक स्वायत्तता के लिए आवश्यक हैं। अमेरिका को भारत की इस स्थिति की समझ दिखानी होगी और दोनों देशों को इस मुद्दे पर व्यावहारिक समाधान खोजना होगा।

मानवाधिकार और लोकतंत्र

मानवाधिकार और लोकतंत्र के मुद्दे भी कभी-कभी भारत-अमेरिका संबंधों में तनाव का कारण बनते हैं। कश्मीर की स्थिति, धार्मिक अल्पसंख्यकों की स्थिति और भारत में लोकतांत्रिक संस्थानों की स्थिति पर अमेरिकी चिंताएं व्यक्त की जाती हैं। भारत इन मुद्दों को आंतरिक मानता है और अमेरिकी हस्तक्षेप को अनुचित मानता है।

हालांकि, दोनों देशों के नेताओं ने इन मुद्दों को द्विपक्षीय संबंधों के व्यापक हितों के संदर्भ में देखने की कोशिश की है। लोकतंत्र और मानवाधिकारों के साझा मूल्यों के बावजूद दोनों देशों के बीच इन मुद्दों पर कभी-कभी मतभेद रहते हैं।

भविष्य की दिशा और संभावनाएं

रणनीतिक साझेदारी का विस्तार

भविष्य में भारत-अमेरिका संबंधों की दिशा रणनीतिक साझेदारी के और भी गहरे होने की ओर है। दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग, प्रौद्योगिकी साझाकरण और आर्थिक एकीकरण में वृद्धि होने की संभावना है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती चुनौती दोनों देशों को और भी निकट लाने में भूमिका निभाएगी।

काड के माध्यम से बहुपक्षीय सहयोग का विस्तार होने की संभावना है। इसके अलावा, भारत-अमेरिका-जापान, भारत-अमेरिका-ऑस्ट्रेलिया जैसे त्रिपक्षीय सहयोग के नए ढांचे विकसित हो सकते हैं। इन सहयोगों का उद्देश्य केवल सुरक्षा तक सीमित नहीं होगा बल्कि आर्थिक सहयोग, प्रौद्योगिकी विकास और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों को भी शामिल करेगा।

उभरती प्रौद्योगिकियों में सहयोग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग, 5जी/6जी नेटवर्क, बायोटेक्नोलॉजी और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों में भारत-अमेरिका सहयोग की व्यापक संभावनाएं हैं। इन क्षेत्रों में सहयोग न केवल आर्थिक लाभ प्रदान करेगा बल्कि दोनों देशों की तकनीकी श्रेष्ठता को भी बनाए रखेगा।

भारत-अमेरिका रणनीतिक स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी के तहत स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकी, ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण संरक्षण में सहयोग बढ़ाने की योजना है। जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर दोनों देशों के बीच सहयोग भविष्य की साझेदारी का एक महत्वपूर्ण आयाम होगा।

शिक्षा और अनुसंधान सहयोग

शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में भारत-अमेरिका सहयोग को और भी मजबूत बनाने की संभावनाएं हैं। दोनों देशों के विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों के बीच साझेदारी बढ़ाने की योजना है। फुलब्राइट कार्यक्रम का विस्तार और नए शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम शुरू करने की योजना है।

भारत में अमेरिकी विश्वविद्यालयों की शाखाएं खोलने और संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं को बढ़ावा देने की संभावना है। इससे न केवल शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ेगा बल्कि दोनों देशों के बीच लोगों के बीच संपर्क भी मजबूत होगा।

निष्कर्ष

21वीं सदी में भारत-अमेरिका संबंधों का विकास एक उल्लेखनीय सफलता की कहानी है। शीत युद्ध के दौरान के तनावपूर्ण रिश्तों से आज के रणनीतिक साझेदारी तक का यह सफर दोनों देशों के नेतृत्व की दूरदर्शिता और व्यावहारिकता को दर्शाता है। 2005 के नागरिक परमाणु समझौते से लेकर 2020 के BECA समझौते तक, दोनों देशों के बीच सहयोग के क्षेत्र लगातार बढ़ते रहे हैं।

राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक तीनों आयामों में दोनों देशों के बीच गहरा सहयोग विकसित हुआ है। परमाणु ऊर्जा से लेकर अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी तक, आतंकवाद से लेकर जलवायु परिवर्तन तक, दोनों देशों के बीच सहयोग के क्षेत्र व्यापक हैं। द्विपक्षीय व्यापार में 19 बिलियन डॉलर से 142 बिलियन डॉलर की वृद्धि और रक्षा सहयोग में 17 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश इस सहयोग की गहराई को दर्शाता है।

हिंद-प्रशांत रणनीति और काड के माध्यम से दोनों देशों ने न केवल द्विपक्षीय बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर सहयोग को बढ़ावा दिया है। चीन की बढ़ती चुनौती के संदर्भ में यह सहयोग और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। दोनों देशों के बीच बढ़ता सामरिक सहयोग न केवल उनकी अपनी सुरक्षा के लिए बल्कि इस क्षेत्र की स्थिरता के लिए भी आवश्यक है।

हालांकि, इस सहयोग में कुछ चुनौतियां भी हैं। व्यापार असंतुलन, आप्रवासन नीति, रूस के साथ भारत के संबंध और मानवाधिकार जैसे मुद्दे कभी-कभी तनाव का कारण बनते हैं। इन चुनौतियों के बावजूद दोनों देशों के नेताओं ने व्यापक हितों को प्राथमिकता देने की समझदारी दिखाई है।

भविष्य की दिशा में भारत-अमेरिका संबंधों की संभावनाएं उज्ज्वल हैं। उभरती प्रौद्योगिकी में सहयोग, शिक्षा और अनुसंधान में साझेदारी, और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बहुपक्षीय सहयोग के नए

अवसर हैं। दोनों देशों के बीच बढ़ता सहयोग न केवल उनकी अपनी समृद्धि के लिए बल्कि वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए भी महत्वपूर्ण है।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि 21वीं सदी में भारत-अमेरिका संबंधों का विकास दोनों देशों के लिए एक पारस्परिक रूप से लाभकारी साझेदारी है। यह साझेदारी न केवल द्विपक्षीय हितों को पूरा करती है बल्कि वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भविष्य में इस साझेदारी के और भी गहरे होने की संभावना है, जो दोनों देशों और पूरी दुनिया के लिए फायदेमंद होगी।

संदर्भ

1. सिंह, जसवंत. (2018). भारत-अमेरिका संबंध: एक नया युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. कचरु, विजय. (2020). शीत युद्ध के बाद भारत-अमेरिका संबंध. जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, 45(3). पृ० सं०-12-25।
3. मलिक, अशोक. (2019). भारत और वैश्विक शासन: संयुक्त राष्ट्र में भूमिका. विदेश नीति जर्नल, 22(4), पृ० सं०-56-68।
4. मिश्रा, राकेश. (2021). लोकतंत्र और भारत-अमेरिका संबंध. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. पंत, हर्ष. (2020). भारत-अमेरिका 2+2 संवाद: रणनीतिक साझेदारी की नींव. ऑब्जरवर रिसर्च फाउंडेशन।
6. जोशी, मनोज. (2023). मोदी युग में भारत-अमेरिका संबंध. इंडिया टुडे, 15 जून।
7. कपूर, दीपक. (2022). भारतीय प्रवासी और भारत-अमेरिका संबंध. इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स।
8. शर्मा, अनिल. (2021). भारतीय-अमेरिकी समुदाय की राजनयिक भूमिका. जर्नल ऑफ डायस्पोरा स्टडीज. 10(2), पृ० सं०-33-47।
9. भारत सरकार. (2023). वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट 2022-23. नई दिल्ली: भारत सरकार।
10. यूएस ट्रेड रिप्रेजेंटेटिव. (2023). यूएस-इंडिया ट्रेड फैक्टशीट. वाशिंगटन डीसी: यूएसटीआर।
11. व्हाइट हाउस. (2023). यूएस-इंडिया साझेदारी: iCET और तकनीकी सहयोग. प्रेस विज्ञप्ति, 22 जून।
12. भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय. (2023). भारत-अमेरिका संयुक्त शोध पहल. नई दिल्ली: भारत सरकार।
13. गुप्ता, संजय. (2022). भारत-अमेरिका व्यापार: चुनौतियां और अवसर. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 57(20), पृ० सं०-45-52।
14. सेंटर फॉर स्ट्रैटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज. (2023). भारत-अमेरिका आर्थिक साझेदारी. वाशिंगटन डीसी: CSIS.

15. रक्षा मंत्रालय, भारत. (2020). भारत-अमेरिका रक्षा सहयोग: BECA समझौता. नई दिल्ली: भारत सरकार।
16. यूएस डिपार्टमेंट ऑफ डिफेंस. (2021). यूएस-इंडिया डिफेंस पार्टनरशिप. वाशिंगटन डीसी: DoD.
17. जायल, श्याम. (2021). काड और हिंद-प्रशांत रणनीति. स्ट्रैटेजिक एनालिसिस, 45(4), पृ० सं०-23-35।
18. काड जॉइंट स्टेटमेंट. (2023). काड लीडर्स समिट 2023. टोक्यो: काड सचिवालय।
19. भारतीय नौसेना. (2022). मालाबार अभ्यास 2022: समुद्री सुरक्षा में सहयोग. नई दिल्ली: भारतीय नौसेना।
20. यूएस स्टेट डिपार्टमेंट. (2023). यूएस-इंडिया काउंटर-टेररिज्म कोऑपरेशन, वाशिंगटन डीसी: स्टेट डिपार्टमेंट।
21. पांडे, रमेश. (2022). रूस-यूक्रेन संकट और भारत-अमेरिका संबंध. डिप्लोमैट, 12मार्च।
22. ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूशन. (2023). भारत और भूराजनीतिक चुनौतियां, वाशिंगटन डीसी: ब्रूकिंग्स।
23. द इकोनॉमिक टाइम्स. (2024). ट्रम्प 2.0 और भारत-अमेरिका व्यापार. 10 जनवरी।
24. विदेश मंत्रालय, भारत. (2024). भारत-अमेरिका COMPACT: भविष्य की साझेदारी. नई दिल्ली: भारत सरकार।